ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे   निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26 अंकः 70 बुलेटिन अवधिः 9–13 सितम्बर, 2017 दिनः षुक्रवार दिनाँकः 08 सितम्बर, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	09–09–2017	10–09–2017	11–09–2017	12–09–2017	13–09–2017
वर्षा (मिमी0)	2	2	10	10	15
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	24	22	22	23	24
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	16	16	16	15	15
बादल आच्छादन	मध्यम बादल	घने बादल	घने बादल	मध्यम बादल	मध्यम बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	90	90	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	60	65	65	60	55
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	008	006	004	004	004
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**1** से **7 सितम्बर,** 2017 सुबह 8:30 तक) में मध्यम से `घने बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 20.4 से 24.2 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 13.0 से 15.3 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्ष

फसल प्रबन्धः

- दलहनी फसलो मे खरपतवार नियंत्रण तथा जल निकासी की उचित व्यवस्था करे।
- गन्ने के तीन झुण्डों को को आपस में मिलाकर बधाई करें।
- धान में पत्ते नोक से नीचे की तरफ पीले पड़कर सुखने की अवस्था में स्ट्रेप्टो साइक्लीन 15 ग्रा0 . कॉपरऑक्सीक्लोराइड 500 ग्रा0 500 ली0 में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

- धान की पत्तियो पर गोलाकार भूरे रंग के धब्बे दिखाई पड़ने पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 1250 ग्रा0 या प्रोपीनेप का 1.5–2.0 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे।
- मक्के की पत्तियो पर लाल रंग के अण्डाकार धब्बे दिखाई पडने पर मेन्कोजेब 1.5 किग्रा0 का घील बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे।
- धान फसलो मे खरपतवार नियंत्रण तथा पानी रोकने की उचित व्यवस्था करे।
- गन्ने की फसल में खरपतवार नियंत्रण व बधाई तथा जल निकासी की उचित व्यवस्था करे।
- धान में तना वेधक व पत्ति मरोड़क का प्रकोप होने पर क्लोरान्ट्रनिलिप्रोल 0.4 जी को 10000 ग्राम/है0 या फिप्रोनिल 0.3 जीआर 25000 ग्राम/है0 या कारटाप 4 जीआर 18750 ग्राम /है0 की दर से छिड़काव रोपाई से 50 दिन के अन्दर करें।

उद्यान प्रबन्धः

- सिंचित घाटी क्षेत्रों में घरेलू उपयोग हेतु इस सप्ताह तक मूली एवं शलजम की बुवाई करें।
- असिंचित मध्यम ऊंचे क्षेत्रों में मूली की प्रजाति जैसे मीनू अर्ली, जपानी वाईट, पूसा हिमानी एवं शलजम की अगेती प्रजाति परपिलटाप, वाईट ग्लो, की तुरंत बुवाई करें।
- आलू की खड़ी फसल में जल निकासी की उचित व्यवस्था रखें तथा उपर्युक्त नमी की दशा में खुदाई कर कंदो को बजार में बेचें।
- फ्रासबीन में तने एवं पत्तियो पर फॅफूदी की सफेद बढ़वार दिखाई देने पर कार्बेन्डाजिम का 500 ग्रा0 500 ली0 पानी का घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे।
- यदि बन्दगोभी, फूलगोभी, मूली एवं शलजम आदि सब्जियों की यदि पूर्व में बुवाई/प्रतिरोपित की गई हो तथा फसल लगभग तैयार है तो कटाई कर बाजार में बिक्री करें।
- कीटनाशी का छिड़काव बारिश न होने पर ही करें।
- शीतोष्ण फलों में, तनों तथा टैहनियों पर लाइकेन की पपड़ी को हटाने के लिए 1 प्रतिशत कास्टिक सोडा का छिड़काव करें।
- अत्यधिक वर्षा के कारण फल पौधों के थालों में एकत्रित पानी के निकास की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- सदाबहार फल पौधों जैसे आम, अमरूद, नींबू, पपीता, लीची आदि फल पौधों को लगायें।
- बागीचों में खरपतवारों के नियंत्रण हेतु निराई–गुड़ाई करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- इस महीने पशुओं खासकर भैंसों में प्रसव की दर बढ़ जाती है। अतः जो पशु ज्ञामन है उनको अन्य पशुओ से अलग कर थोड़ी मात्रा में कई बार अतिरिक्त पूरक आहार दें अन्यथा उन्हें आफरा (पेट फूलना) की समस्या हो सकती है।
- पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।
- पीने का पानी स्वच्छ होना चाहिए तथा गन्दे पानी में परजीवी जनित व फफूदी जनित विषाणु की सम्भावना होती है।
- नमी की वजह से आहार में फफूॅदी लग जाती है जिससे आहार में पोषक तत्व की कमी हो जाने से अपलाटॉक्सीकोशिश नामक बीमारी हो जाती है। इससे मुर्गियों के पेट में कीड़े पड़ने से अण्डा देने की क्षमता घट जाती है ऐसी मुर्गियों को पशु चिकित्सक की सलाह से कृमिनाशक दवा महीने में एक बार अवश्य दें।
- पशुओं का आवास सूखा होना चाहिए इसके लिए समय–समय पर चूने का छिड़काव करें।
- पशु को ब्याने के बाद अच्छी तरह से साफ–सफाई करके निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह से यूटरोटोन/हरीरा/गाइनोटोन नामक दवा में से किसी एक दवा की 200 मिली मात्रा सुबह शाम तीन दिनों तक गर्भाशय की सफाई हेतु देनी चाहिए।
- प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।

डा0 आर0 के0 सिंह

प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,